अध्याय 2: साना-साना हाथ जोड़ि

विषय-सूची		1 प्रश्नावली · 16 प्रश्न
प्रश्नावली 2.1	प्रश्न-अभ्यास	16 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था?

हल

रात में जब लेखिका ने गंतोक को देखा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आसमान उलटा पड़ा हो और सारे तारे बिखरकर नीचे टिमटिमा रहे हों।

दूर ढलान लेती तराई पर सितारों के गुच्छे रोशनियों की एक झालर-सी बना रहे थे — वास्तव में यह रात में जगमगाता गंतोक शहर था।

वह रहस्यमयी सितारों भरी रात लेखिका में सम्मोहन जगा रही थी। उन जादू भरे क्षणों में उसका सब कुछ — मैं, मेरी चेतना, मेरा आस-पास — स्थगित और अर्थहीन हो गया था।

उसके भीतर-बाहर केवल शून्य था और अतींद्रियता (इन्द्रियों से परे की अनुभूति) में डूबी रोशनी की जादुई झालर थी।

इस प्रकार रात के जगमगाते गंतोक की दृश्य-छटा ने लेखिका के मन-मस्तिष्क पर ऐसा जादुई असर डाला कि वह पूरी तरह सम्मोहित हो गई।

उत्तर: रात में जगमगाता गंतोक शहर उलटे आसमान जैसा दिखता था जिसमें तारे बिखरकर नीचे टिमटिमा रहे थे। इस जादुई छटा ने लेखिका को अतींद्रिय शून्य में डुबो दिया — उसका सब कुछ स्थगित और अर्थहीन हो गया।

प्रश्न 2

गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

हल

लेखिका ने गंतोक को 'इतिहास और वर्तमान के संधि-स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा है।

इस कथन से तात्पर्य यह है कि गंतोक के निवासी अत्यंत परिश्रमी हैं — वे कठोर पहाड़ी परिस्थितियों में श्रम करके अपनी जीविका अर्जित करते हैं।

पहाड़ की दुर्गम भूमि पर खेती करना, कठिन रास्तों पर पत्थर ढोना, मवेशी चराना — ये सब कठिन कार्य वहाँ के लोग बिना किसी शिकायत के करते हैं।

ये लोग भले ही धनवान बादशाह नहीं हैं, परंतु अपने श्रम और परिश्रम के बल पर वे किसी बादशाह से कम नहीं — इसीलिए उन्हें 'मेहनतकश बादशाह' कहा गया है।

इस शहर की हर सुबह, शाम और रात सुंदर है, जो उन्हीं परिश्रमी लोगों की देन है।

उत्तर: गंतोक के लोग अत्यंत परिश्रमी हैं। कठोर पहाड़ी जीवन में वे कठिन श्रम करके अपनी जीविका चलाते हैं। अपनी मेहनत के बल पर वे किसी बादशाह जैसी शान से जीते हैं, इसलिए इसे 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहा गया।

प्रश्न 3

कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

हल

जितेन नार्गे ने लेखिका को बताया कि उस क्षेत्र में बुद्ध की बड़ी मान्यता है और पताकाएँ दो भिन्न अवसरों पर फहराई जाती हैं।

श्वेत (सफ़ेद) पताकाएँ: जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इन्हें उतारा नहीं जाता — ये धीरे-धीरे अपने आप ही नष्ट हो जाती हैं।

रंगीन पताकाएँ: किसी नए शुभ कार्य की शुरुआत के अवसर पर रंगीन पताकाएँ लगाई जाती हैं।

इस प्रकार श्वेत पताकाएँ मृत्यु और आत्मा की शांति का प्रतीक हैं, जबकि रंगीन पताकाएँ किसी नए शुभारंभ का प्रतीक हैं।

उत्तर: श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर उसकी आत्मा की शांति के लिए एक सौ आठ की संख्या में फहराई जाती हैं और धीरे-धीरे अपने आप नष्ट होती हैं। रंगीन पताकाएँ किसी नए शुभ कार्य की शुरुआत पर लगाई जाती हैं।

प्रश्न 4

जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं, लिखिए।

हल

जितेन नार्गे ड्राइवर-कम-गाइड था जो पूरी यात्रा में लेखिका को विभिन्न महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देता रहा:

प्रकृति एवं भूगोल: गंतोक से 149 किलोमीटर की दूरी पर यूमथांग है; यूमथांग का अर्थ है 'घाटियाँ'; सारे रास्ते हिमालय की गहनतम घाटियाँ और फूलों से लदी वादियाँ मिलती हैं।

पताकाओं के बारे में: बुद्धिस्ट की मृत्यु पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं; नए कार्य पर रंगीन पताकाएँ लगाई जाती हैं।

ऐतिहासिक जानकारी: कवी-लोंग स्टॉक में 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी; वहाँ तिब्बत के चीस-खे बम्सन ने लेपचाओं के शोमेन से कुंजतेक के साथ संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे।

जनजीवन: पहाड़ी बच्चे प्रतिदिन तीन-साढ़े तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़ाई चढ़कर स्कूल जाते हैं; वे शाम को माँ के साथ मवेशी चराते हैं, पानी भरते हैं और जंगल से लकड़ियाँ ढोते हैं।

प्रदूषण: प्रदूषण के कारण स्नोफॉल लगातार कम हो रही है।

गंतोक के बारे में: इसका सही नाम 'गंतोक' है जिसका अर्थ है 'पहाड़'; पहाड़, नदी और झरनों की वे पूजा करते हैं इसलिए गंतोक इतना सुंदर है।

उत्तर: जितेन नार्गे ने यूमथांग की दूरी व भूगोल, बौद्ध पताकाओं के रिवाज, कवी-लोंग स्टॉक का ऐतिहासिक महत्त्व, पहाड़ी बच्चों के कठिन जीवन, प्रदूषण से घटती बर्फबारी, तथा 'गंतोक' नाम का अर्थ बताया।

प्रश्न 5

लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

हल

लोंग स्टॉक में एक कुटिया के भीतर घूमता हुआ धर्म चक्र (प्रेयर व्हील) था जिसके बारे में नार्गे ने बताया कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।

यह सुनकर लेखिका को भारत की एकता का बोध हुआ। उसने सोचा — 'चाहे मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी।'

मैदान में भी लोग धार्मिक स्थलों, नदियों में स्नान, मंदिरों में जाने से पाप-मुक्ति की कामना करते हैं। पहाड़ पर भी लोग प्रेयर व्हील घुमाकर पाप-मुक्ति चाहते हैं।

इस प्रकार देश के हर कोने में लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक जैसी हैं।

इसीलिए लेखिका को लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक जैसी है — चाहे वह मैदान का हो या पहाड़ का।

उत्तर: प्रेयर व्हील घुमाने से पाप धुलने की मान्यता देखकर लेखिका को लगा कि मैदान हो या पहाड़, इस देश की आत्मा एक जैसी है — लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ सर्वत्र समान हैं।

प्रश्न 6

जितेन नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

हल

जितेन नार्गे एक आदर्श गाइड था। उसके व्यवहार के आधार पर एक कुशल गाइड के निम्नलिखित गुण होने चाहिए:

स्थानीय ज्ञान: जितेन को सिक्किम की भूगोल, इतिहास, परंपराओं, धर्म, वनस्पति और स्थानीय जनजीवन की गहरी जानकारी थी। वह हर जगह का इतिहास और महत्त्व बता सकता था।

भाषा-कौशल: वह हिंदी में सहजता से बात कर सकता था और नेपाली, स्थानीय भाषाएँ भी जानता था।

मैत्रीपूर्ण स्वभाव: उसकी लुभावनी हँसी और मैत्रीपूर्ण व्यवहार से सैलानी उससे जुड़ाव महसूस करते थे।

कुशल ड्राइवर: खतरनाक पहाड़ी रास्तों पर भी वह आत्मविश्वास से गाड़ी चलाता था।

सैलानियों की देखभाल: वह सैलानियों को सुंदर दृश्यों की ओर प्रेरित करता और उनके मनोबल को बनाए रखता था।

अपनी संस्कृति पर गर्व: अपनी भाषा, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति उसे गहरा गर्व था।

उत्तर: एक कुशल गाइड में स्थानीय इतिहास-भूगोल-परंपराओं का गहरा ज्ञान, भाषा-कौशल, मैत्रीपूर्ण व्यवहार, कुशल वाहन-चालन और अपनी संस्कृति के प्रति गर्व होना चाहिए — जैसे जितेन नार्गे में था।

प्रश्न 7

इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के जिन-जिन रूपों का चित्र खींचा है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

हल

इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका मधु कांकरिया ने हिमालय के अनेक रूपों का सजीव चित्रण किया है:
विराट और भव्य रूप: ऊँचाई पर चढ़ते-चढ़ते हिमालय छोटी पहाड़ियों से बढ़कर विशालकाय स्वरूप धारण करने लगा; भीमकाय पर्वत दिखाई दिए।
जलेबी जैसे घुमावदार रास्तों वाला: रास्ते वीरान, सँकरे और जलेबी की तरह घुमावदार हो गए।
फूलों से लदा: बीच-बीच में करिश्मे की तरह रंग-बिरंगे फूल शिद्दत से मुसकराते दिखे; यूमथांग की घाटियाँ प्रियुता और रूडोडेंड्रो के फूलों से भरी थीं।
झरनों वाला: 'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल' — खूब ऊँचाई से पूरे वेग के साथ फेन उगलता झरना।
बर्फ से ढका: कटाओ में घुटनों तक नरम-नरम बर्फ से ढके पहाड़, चाँदी-से चमकते शिखर।
बादलों में लिपटा: धुंध की चादर में लिपटे छाया-पहाड़; सब पर बादलों की मोटी चादर।
पल-पल परिवर्तित: हिमालय पल-पल अपना रूप बदलता रहता है — कभी हरा-भरा, कभी पथरीला, कभी बर्फीला।

उत्तर: लेखिका ने हिमालय के विराट-भव्य, फूलों से लदे, झरनों वाले, बर्फ से ढके, बादलों में लिपटे और पल-पल परिवर्तित होने वाले अनेक रूपों का सजीव चित्रण किया है।

प्रश्न 8

प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

हल

प्रकृति के अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को विभिन्न प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं:
आत्मिक एकात्मता: संपूर्णता के क्षणों में मन इस बिखरे सौंदर्य से इस कदर एकात्म हो जाता है कि भीतर-बाहर की रेखा मिट जाती है, आत्मा की सारी खिड़कियाँ खुलने लगती हैं।
ईश्वर के निकट होने का अहसास: उन क्षणों में लेखिका को लगता है कि वह सचमुच ईश्वर के निकट है।
जीवन-शक्ति का अहसास: 'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल' के पास जलधारा में पाँव डुबोने पर उसे जीवन की अनंतता और शक्ति का अहसास होता है। भीतर की सारी तामसिकताएँ बह जाती हैं।
अध्यात्म से जुड़ाव: बर्फ से ढके हिम-शिखर लेखिका को आध्यात्मिक अतीत से जोड़ते हैं। उसे लगता है कि ऐसी ही विभोर करने वाली दिव्यता में ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी।
चलायमान सौंदर्य की समझ: पहली बार उसे यह अहसास होता है कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है।
नश्वरता का बोध: सतत प्रवाहमान झरने, नदी, बादल और फूलों के बीच 'तिनके-सा बहता हमारा वजूद' — यह जीवन की नश्वरता का बोध भी कराता है।

उत्तर: विराट प्रकृति को देखकर लेखिका को आत्मिक एकात्मता, ईश्वर की निकटता, जीवन-शक्ति, अध्यात्म से जुड़ाव और यह बोध होता है कि जीवन का आनंद इसी चलायमान सौंदर्य में है।

प्रश्न 9

प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए?

हल

हालाँकि प्रकृति का अलौकिक सौंदर्य लेखिका को अभिभूत किए हुए था, फिर भी कुछ दृश्यों ने उसे गहराई से झकझोरा:

पत्थर तोड़ती पहाड़ी औरतें: उस स्वर्गीय सौंदर्य के बीच पहाड़ी औरतें पत्थर तोड़ रही थीं। कोमल काया पर हाथों में कुदाल और हथौड़े थे। कईयों की पीठ पर बँधी टोकरी में उनके बच्चे भी बँधे थे। यह मातृत्व और श्रम-साधना का युगपत चित्र लेखिका को विचलित कर गया।

फूलों-वादियों के बीच जीवन-संघर्ष: नदी, फूलों, वादियों और झरनों के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिंदा रहने की यह जंग देखकर लेखिका को झटका लगा।

चाय बागान में युवतियाँ: नदी की तरह उफान लेता उनका यौवन और श्रम से दमकता गुलाबी चेहरा — अत्यधिक सौंदर्य लेखिका के लिए असह्य हो गया।

फ़ौजी छावनियाँ और सैनिकों का कठिन जीवन: माइनस 15 डिग्री की कड़ाके की ठंड में सीमा पर तैनात सैनिकों का जीवन देखकर मन उदास हो गया। 'वी गिव अवर टुडे फॉर योर टुमारो' — यह लिखावट देखकर भीतर कुछ पिघलने लगा।

उत्तर: पत्थर तोड़ती पहाड़ी औरतें (पीठ पर बच्चे बाँधे), चाय बागान में श्रमरत युवतियाँ, और माइनस 15 डिग्री में सीमा पर तैनात सैनिकों के दृश्यों ने लेखिका को प्राकृतिक सौंदर्य के बीच झकझोर दिया।

प्रश्न 10

सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

हल

सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में अनेक लोगों का अप्रत्यक्ष परंतु महत्त्वपूर्ण योगदान होता है:

गाइड (जैसे जितेन नार्गे): यात्रा-मार्ग की जानकारी, स्थानीय इतिहास-संस्कृति का परिचय और सुरक्षित ड्राइविंग से यात्रा को सुखद बनाते हैं।

पत्थर तोड़ने वाली पहाड़ी महिलाएँ (BRO कर्मी): खतरनाक पहाड़ी रास्तों को चौड़ा और सुलभ बनाती हैं, जिन पर सैलानी यात्रा कर पाते हैं।

BRO (बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन) के कर्मचारी: पहाड़ों पर रास्ते बनाते हैं — जान जोखिम में डालकर।

सैनिक: देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं और सैलानियों के लिए वातावरण सुरक्षित रखते हैं।

स्थानीय निवासी: प्रकृति की रक्षा करते हैं — नदी, पहाड़, झरनों को पूजते हैं, गंदगी नहीं फैलाते — जिससे यह प्राकृतिक सौंदर्य बना रहता है।

उत्तर: गाइड, पत्थर तोड़ती पहाड़ी महिलाएँ, BRO कर्मी, सैनिक और पर्यावरण-प्रेमी स्थानीय निवासी — ये सभी मिलकर सैलानियों के लिए पर्वतीय यात्रा को संभव और सुंदर बनाते हैं।

प्रश्न 11

'कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।' इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

हल

यह कथन लेखिका ने उन पहाड़ी महिलाओं के संदर्भ में सोचा जो अत्यंत कम वेतन पाकर खतरनाक पहाड़ी रास्ते बनाने का कठिन श्रम करती थीं।

लेखिका ने उन्हें 'वेस्ट एट रिपेईंग' (Least at receiving, most at giving) कहा — अर्थात् जो कम लेती हैं पर अधिक देती हैं।

आम जनता की भूमिका: देश की वास्तविक आर्थिक प्रगति उन लाखों मजदूरों, किसानों, श्रमिकों और कारीगरों के हाथों होती है जो बहुत कम पारिश्रमिक पर देश के ढाँचे को खड़ा करते हैं।

ये लोग सड़कें, पुल, बाँध बनाते हैं; खेत जोतते हैं; चाय के बागान में काम करते हैं; पर इनको उचित हिस्सा नहीं मिलता — 'सारी मलाई एक तरफ, सारे आँसू और अभाव एक तरफ।'

इस विषमता के बावजूद ये लोग देश की उत्पादकता और अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। इनके बिना न सड़क बने, न खेत जोते जाएँ, न उद्योग चले।

अतः आम जनता 'जीवन का प्रति-संतुलन' है — देश की प्रगति में उनका योगदान सर्वाधिक है, पर उनका हिस्सा सबसे कम।

उत्तर: आम जनता सबसे कम लेकर सबसे अधिक देती है — सड़क, खेत, उद्योग सब उन्हीं के श्रम पर टिके हैं। देश की वास्तविक आर्थिक प्रगति इन्हीं मजदूरों, किसानों और श्रमिकों की मेहनत से होती है, भले ही इन्हें उचित प्रतिफल न मिले।

प्रश्न 12

आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

हल

पाठ में उल्लिखित प्रकृति के साथ खिलवाड़ के उदाहरण: प्रदूषण के कारण स्नोफॉल लगातार कम होती जा रही है जिससे हिम-शिखर पिघल रहे हैं।

आज की पीढ़ी प्रकृति के साथ निम्न प्रकार के खिलवाड़ कर रही है:

वायु प्रदूषण: वाहनों और कारखानों से निकला धुआँ वायुमंडल में प्रदूषण बढ़ा रहा है जिससे बर्फबारी घट रही है।

जल प्रदूषण: नदियों और झरनों में कचरा और रसायन छोड़े जा रहे हैं।

वन कटाई: जंगलों को काटकर पर्यावरण असंतुलन बढ़ रहा है।

पर्यटन-जनित प्रदूषण: टूरिस्ट स्पॉट पर प्लास्टिक कचरा फैलाया जाता है।

इसे रोकने में हमारी भूमिका:

पहाड़ी लोगों की तरह प्रकृति को पूजना चाहिए — नदी, पहाड़, झरने को गंदा न करना।

प्लास्टिक और सिंगल-यूज सामग्री का उपयोग कम करना।

वृक्षारोपण में भाग लेना।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना।

लेखिका के शब्दों में: 'हमारी पीढ़ी ने प्रकृति की लय, ताल और गति से खिलवाड़ कर अक्षम्य अपराध किया है।'

उत्तर: आज की पीढ़ी वायु-जल प्रदूषण, वन-कटाई और पर्यटन-कचरे से प्रकृति को नुकसान पहुँचा रही है। हमें प्रकृति की पूजा-रक्षा करनी चाहिए, प्लास्टिक छोड़ना चाहिए और वृक्षारोपण करना चाहिए।

प्रश्न 13

प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है? प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आए हैं, लिखें।

हल

पाठ में एक सिक्किमी नवयुवक ने लेखिका को बताया कि प्रदूषण के चलते स्नो-फॉल लगातार कम होती जा रही है।

प्रदूषण के अन्य दुष्परिणाम जो इस पाठ के संदर्भ में और सामान्य ज्ञान से स्पष्ट होते हैं:

हिम-शिखरों का पिघलना: स्नोफॉल कम होने से हिम-शिखर पिघलते हैं जिससे भविष्य में जल-संकट उत्पन्न होगा। मणि ने बताया था कि ये हिम-शिखर ही पूरे एशिया के 'जल स्तंभ' हैं — सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह करते हैं, गर्मियों में पिघलकर नदियों को जल देते हैं।

जैव-विविधता की हानि: वन-कटाई और प्रदूषण से पहाड़ी वनस्पति और वन्य जीव प्रभावित होते हैं।

वायु-प्रदूषण: पहाड़ों पर भी वायु की शुद्धता प्रभावित हो रही है।

प्राकृतिक आपदाएँ: अनियंत्रित पर्यटन और निर्माण कार्य से भूस्खलन जैसी आपदाओं का खतरा बढ़ता है।

पर्यटन में कमी: यदि बर्फबारी खत्म हो गई तो कटाओ और यूमथांग जैसे स्थानों की प्राकृतिक सुंदरता नष्ट हो जाएगी।

उत्तर: प्रदूषण से स्नोफॉल घटी है जिससे हिम-शिखर (एशिया के जल स्तंभ) पिघल रहे हैं — भविष्य में जल-संकट होगा। इसके अलावा जैव-विविधता की हानि, वायु-प्रदूषण और भूस्खलन जैसे दुष्परिणाम भी हैं।

प्रश्न 14

'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए?

हल

कटाओ — भारत का स्विट्जरलैंड — लायुंग से 500 फीट ऊँचाई पर है। यह अभी तक टूरिस्ट स्पॉट नहीं बना था और इस कारण वहाँ एक भी दुकान नहीं थी।

लेखिका ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया — उन्हें किराए के जूते नहीं मिले, पर वहाँ का प्राकृतिक स्वरूप अछूता था।

दुकानों का न होना वरदान क्यों है:

प्राकृतिक स्वरूप की रक्षा: झांगू लेक और यूमथांग जैसे टूरिस्ट स्पॉट पर दुकानें लगने से बाजारीकरण और प्रदूषण बढ़ता है। कटाओ इससे बचा हुआ था।

कचरे से मुक्त: दुकानों से प्लास्टिक और पैकेजिंग कचरा फैलता है जो पहाड़ों पर बर्फ को गंदा करता है।

शांत वातावरण: अत्यधिक पर्यटन से शोर-शराबा बढ़ता है जो पहाड़ की शांति भंग करता है।

जैव-विविधता की रक्षा: पर्यटन-भार कम होने से वहाँ के पेड़-पौधे और वन्य जीव सुरक्षित रहते हैं।

निष्कर्ष: दुकानों का न होना अल्पकालिक असुविधा है, पर दीर्घकालिक रूप से यह कटाओ की प्राकृतिक सुंदरता और शुद्धता को बनाए रखने का वरदान है।

उत्तर: कटाओ पर दुकान न होने से वहाँ बाजारीकरण, प्लास्टिक-कचरा और पर्यटन-प्रदूषण नहीं पहुँचा। इससे उसका प्राकृतिक स्वरूप, शांति और जैव-विविधता अक्षुण्ण रही — यही उसका वरदान है।

प्रश्न 15

प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

हल

यात्रा के दौरान कटाओ में बर्फ से ढके हिम-शिखर देखकर लेखिका की सहेली मणि ने जल संचय की प्राकृतिक व्यवस्था की व्याख्या की:
मणि ने कहा — 'ये हिमशिखर जल स्तंभ हैं, पूरे एशिया के।'
प्रकृति की व्यवस्था इस प्रकार है: सर्दियों में हिमालय के शिखरों पर बर्फ के रूप में जल संग्रह होता है। यह बर्फ जमा होती रहती है।
गर्मियों में जब मैदानों में पानी के लिए त्रहि-त्रहि मचती है, तब ये ही बर्फ की शिलाएँ पिघल-पिघल जलधारा बन जाती हैं।
ये जलधाराएँ नदियों के रूप में मैदानी इलाकों में पहुँचती हैं और सूखे कंठों को तरावट पहुँचाती हैं।
इस प्रकार प्रकृति ने हिम-शिखरों को विशाल जल-भंडार के रूप में बनाया है जो पूरे एशिया की नदियों को जीवन देते हैं।
मणि ने कहा — 'कितनी अद्भुत व्यवस्था है जल संचय की!'

उत्तर: प्रकृति ने हिम-शिखरों को जल-भंडार (जल स्तंभ) बनाया है। सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह होता है; गर्मियों में वही बर्फ पिघलकर नदियों के रूप में बहती है और पूरे एशिया को जीवन-जल देती है।

प्रश्न 16

देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

हल

कटाओ और उसके आसपास बॉर्डर एरिया में लेखिका को फ़ौजी छावनियाँ दिखीं और वहाँ एक जवान से बातचीत से उनकी कठिनाइयों का पता चला:
भीषण ठंड: उस समय तापमान माइनस 15 डिग्री सेल्सियस था। जवान पौष और माघ में भी — जब सिवाय पेट्रोल के सब कुछ जम जाता है — तैनात रहते हैं।
खतरनाक रास्ते: सँकरे, घुमावदार और दुर्गम पहाड़ी रास्तों पर जान जोखिम में डालकर ड्यूटी करनी पड़ती है।
परिवार से दूरी: महीनों-वर्षों तक परिवार से दूर रहना पड़ता है।
छावनी पर लिखा था: 'वी गिव अवर टुडे फॉर योर टुमारो' — अर्थात् वे अपना वर्तमान देकर हमारा भविष्य सुरक्षित करते हैं।
एक जवान ने कहा: 'आप चैन की नींद सो सकें, इसीलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं।'

हमारा उत्तरदायित्व:
उनके बलिदान और कठिनाइयों के प्रति कृतज्ञता रखनी चाहिए।
उनके परिवारों की सुध लेनी चाहिए।
देश के लिए उनके त्याग को समझना और सम्मान करना चाहिए।
उनके लिए बेहतर सुविधाएँ सुनिश्चित करने की माँग करनी चाहिए।

उत्तर: सीमा के जवान माइनस 15 डिग्री की ठंड, दुर्गम रास्तों और परिवार से विछोह सहते हैं। हमारा उत्तरदायित्व है कि उनके त्याग के प्रति कृतज्ञ रहें, उनके परिवारों का सम्मान करें और उनकी बेहतर सुविधाओं की माँग करें।